Vol 7, Issue 7, 2024 **Impact Factor: 5.099** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2024.7.7.7514

I J A M S R

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

मुजफ्फरपुर, बिहार के शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

विभूति रंजन [1]
अध्येता (पीएचडी)

डॉ० मांडवी राय [2]
शिक्षा विभाग, स्कूल ऑफ़ एजुकेशन

[1,2] वाई. बी. एन. यूनिवर्सिटी, राजाउलाटू, नामकुम, रांची

सारांश:

यह अध्ययन पर्यावरण संकट पर केंद्रित है और युवाओं, विशेष रूप से छात्रों की भूमिका को रेखांकित करता है, जो इन चुनौतियों से निपटने में महत्वपूर्ण हैं। भारत में, शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के बीच शिक्षा और संसाधनों की उपलब्धता में अंतर के कारण छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर में भिन्नता होती है। यह शोध बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण की तुलना करता है। इसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और संसाधनों के संरक्षण जैसे मुद्दों पर छात्रों की जागरूकता, दृष्टिकोण, और व्यवहार में अंतर का मूल्यांकन करना है। अध्ययन के निष्कर्ष पर्यावरणीय शिक्षा के कार्यक्रमों को बेहतर बनाने और छात्रों की पर्यावरणीय जिम्मेदारी को बढ़ाने में सहायक होंगे। इससे न केवल युवाओं में सकारात्मक सामाजिक बदलाव आएगा, बल्कि यह स्थायी विकास की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

प्रमुख शब्द: पर्यावरणीय जागरूकता, शहरी और ग्रामीण विद्यालय, जलवायु परिवर्तन, संसाधनों का संरक्षण, पर्यावरणीय दृष्टिकोण

1. परिचय

वर्तमान समय में पर्यावरण संकट एक गंभीर वैश्विक चुनौती बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वन्य जीवों की विलुप्ति और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन जैसे मुद्दे न केवल पर्यावरण को प्रभावित कर रहे हैं, बल्कि मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे में, युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे भविष्य के नेता और निर्णय निर्माता हैं। भारत में, शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के छात्रों के बीच शिक्षा, संसाधनों की उपलब्धता, और पर्यावरणीय जागरूकता में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ हो सकती हैं। मुजफ्फरपुर, बिहार जैसे विकासशील क्षेत्रों में यह भिन्नता और भी स्पष्ट हो जाती है, जहां शहरी और ग्रामीण जीवनशैली में अंतर स्पष्ट है। शहरी विद्यालयों में छात्रों को उच्चतम शिक्षा और आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं, जबकि ग्रामीण विद्यालयों में संसाधनों की कमी और शिक्षा के स्तर में असमानता हो सकती है। इस शोध का उद्देश्य मुजफ्फरपुर के शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना है। यह अध्ययन इस बात पर ध्यान

केंद्रित करेगा कि क्या छात्रों के शहरी या ग्रामीण होने के कारण उनके पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण, जागरूकता और व्यवहार में कोई भिन्नता है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष न केवल पर्यावरणीय शिक्षा के कार्यक्रमों को बेहतर बनाने में सहायक होंगे, बल्कि यह भी दर्शाएंगे कि छात्रों की पर्यावरण के प्रति सोच और दृष्टिकोण को कैसे परिवर्तित किया जा सकता है। इस शोध का महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह युवाओं में पर्यावरणीय जिम्मेदारी को बढ़ावा देने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में योगदान देगा।[1]

1.1 पर्यावरण संकट का परिचय

वर्तमान समय में पर्यावरण संकट एक गंभीर और व्यापक समस्या बन चुका है, जो न केवल वैश्विक स्तर पर बल्कि स्थानीय स्तर पर भी तेजी से उभर रहा है। पर्यावरणीय संकट में प्रमुख रूप से जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन शामिल हैं, जो धरती के पारिस्थितिक तंत्र और मानव जीवन के संतुलन को गहरे स्तर पर प्रभावित कर रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिवर्तन के तहत वैश्विक तापमान में वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) और मौसम चक्रों में असामान्य बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इसका प्रभाव दुनिया भर में देखा जा रहा है, जिसमें अत्यधिक गर्मी, बाढ़, सूखा और हिमनदों के पिघलने जैसी समस्याएँ शामिल हैं। ये परिवर्तन न केवल पर्यावरणीय असंतुलन पैदा कर रहे हैं, बल्कि कृषि, जल संसाधन और जैव विविधता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं।[2]

प्रदूषण: वायु, जल, और मिट्टी का प्रदूषण एक और बड़ा पर्यावरणीय संकट है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और वाहनों से निकलने वाले धुएं के कारण वायु की गुणवत्ता में भारी गिरावट आई है, जिससे मानव स्वास्थ्य और जीवित प्रजातियों पर बुरा असर पड़ रहा है। इसी प्रकार, जल स्रोतों में विषैले रसायनों और प्लास्टिक कचरे का प्रवाह जल जीवन को नष्ट कर रहा है और पीने के पानी की उपलब्धता को भी खतरे में डाल रहा है।

संसाधनों का दोहन: प्राकृतिक संसाधनों जैसे पेड़, पानी, खनिज, और जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक दोहन भी पर्यावरणीय संकट को बढ़ावा दे रहा है। यह असंतुलित उपयोग पृथ्वी की पुनर्स्थापना क्षमता से अधिक हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप जंगलों की कटाई, जैव विविधता की हानि, और भूमि के बंजर होने जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

वैश्विक और स्थानीय स्तर पर पर्यावरणीय चुनौतियाँ: ये पर्यावरणीय समस्याएँ न केवल वैश्विक स्तर पर गंभीर संकट पैदा कर रही हैं, बल्कि स्थानीय स्तर पर भी जीवन और आजीविका को प्रभावित कर रही हैं। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में संसाधनों की कमी, खाद्य असुरक्षा, और जलवायु से संबंधित आपदाएँ जैसे मुद्दे सामान्य होते जा रहे हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पर्यावरणीय चुनौतियों का प्रभाव भिन्न-भिन्न होता है। शहरी क्षेत्रों में औद्योगिक प्रदूषण और कचरे की समस्या है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि संकट और संसाधनों की कमी होती जा रही है। इस प्रकार, पर्यावरणीय संकट से निपटने के लिए

[1] शर्मा, ए., महाराणा, पी., साहू, एस., और शर्मा, पी. (2022)। दक्षिण बिहार, भारत में पर्यावरण परिवर्तन और भूजल परिवर्तनशीलता। सतत विकास के लिए भूजल, 19, 100846।

[2] रोलैंड्स, एम. (2000). पर्यावरण संकट: प्रकृति के मूल्य को समझना. स्प्रिंगर.

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

न केवल वैश्विक स्तर पर बल्कि स्थानीय स्तर पर भी ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है, जिसमें युवाओं की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है।[3]

1.2 युवाओं की भूमिका

युवाओं की भूमिका वर्तमान समय में किसी भी समाज में बेहद महत्वपूर्ण है, खासकर जब बात पर्यावरण के मुद्दों की हो। आज का युवा न केवल अपने समुदाय का एक सक्रिय सदस्य है, बल्कि वह भविष्य के नेता और निर्णय निर्माता भी बनने की क्षमता रखता है। इसलिए, पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति उनकी जागरूकता और सक्रियता एक सकारात्मक बदलाव लाने के लिए आवश्यक है।

भविष्य के नेता और निर्णय निर्माता के रूप में युवा

युवाओं की शक्ति और ऊर्जा से भरे विचारों के कारण वे किसी भी समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वे न केवल अपने विचारों और दृष्टिकोणों से समाज को प्रभावित कर सकते हैं, बल्कि नीतियों और निर्णयों को आकार देने में भी मदद कर सकते हैं। आज का युवा डिजिटल युग में रहने वाला है, जो उन्हें विभिन्न माध्यमों से जानकारी प्राप्त करने और उसे साझा करने में सक्षम बनाता है। युवाओं को चाहिए कि वे पर्यावरणीय मुद्दों पर चर्चा करें, स्थानीय और वैश्विक स्तर पर जागरूकता बढ़ाएं, और सकारात्मक बदलाव लाने के लिए संगठनों और समुदायों के साथ मिलकर काम करें। जब युवा पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की दिशा में नेतृत्व करते हैं, तो वे अपने साथ-साथ अन्य पीढ़ियों को भी प्रेरित करते हैं। इससे एक समर्पित और जागरूक समाज का निर्माण होता है, जो पर्यावरण की रक्षा करने में सक्षम है।

पर्यावरणीय मुद्दों पर जागरूकता का महत्व

पर्यावरणीय मुद्दों पर जागरूकता युवाओं के लिए अत्यंत आवश्यक है। जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग के मुद्दे बढ़ रहे हैं, युवाओं को इन समस्याओं के प्रति जागरूक होना चाहिए। जागरूकता केवल ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह छात्रों को अपने विचारों को व्यक्त करने, अपने समुदाय में बदलाव लाने और व्यापक स्तर पर प्रभाव डालने के लिए प्रेरित करती है।

युवाओं की जागरूकता उन्हें पर्यावरणीय नीतियों और प्रथाओं में भागीदारी के लिए सक्षम बनाती है। जब युवा पर्यावरणीय मुद्दों को समझते हैं, तो वे अपने व्यवहार में बदलाव लाने के लिए प्रेरित होते हैं। जैसे कि प्लास्टिक के उपयोग को कम करना, पुनर्चक्रण प्रथाओं को अपनाना, और जल का संरक्षण करना। इसके अलावा, वे सामाजिक मीडिया और अन्य प्लेटफार्मों के माध्यम से अपने विचारों को साझा कर सकते हैं, जिससे उनकी आवाज़ और भी अधिक प्रभावी बन जाती है। युवाओं को यह समझना चाहिए कि वे केवल उपभोक्ता नहीं हैं, बल्कि वे पर्यावरण की रक्षा के लिए सक्रिय भागीदार भी हैं। उनकी छोटी-छोटी गतिविधियाँ,

[3] वर्मा, डी.एस.के. (2015). पर्यावरण संकट और संरक्षण. लुलु.कॉम.

जैसे कि पेड़ लगाना, स्वच्छता अभियानों में भाग लेना, और अपने आसपास के लोगों को जागरूक करना, सभी मिलकर एक बड़े बदलाव का कारण बन सकते हैं।[4]

2. साहित्य की समीक्षा

फ्रेंज़ेन और मेयर (2010)। इस लेख में पर्यावरण के प्रति लोगों की चिंता के कारणों और विकास को शामिल किया गया है। हम कई सैद्धांतिक ढाँचों पर नज़र डालकर शुरू करते हैं, जिन्हें राष्ट्रों के भीतर और राष्ट्रों के बीच पर्यावरण संबंधी विचारों को समझाने के प्रयास में रखा गया है। विशेष रूप से, हम समृद्धि की परिकल्पना, इंगलहार्ट के उत्तर-भौतिकवादी सिद्धांत और डनलप और मेर्टिग के वैश्वीकरण के विवरण पर चर्चा करते हैं। दूसरा चरण 1993 और 2000 के बीच एकत्र किए गए ISSP डेटा का उपयोग करके बहुस्तरीय विश्लेषण करके इन सिद्धांतों का परीक्षण करना है। समृद्धि की परिकल्पना को डेटा द्वारा सबसे अधिक मजबूती से समर्थन मिलता है। किसी देश की सापेक्ष आय और उसके नागरिकों द्वारा व्यक्त की जाने वाली पर्यावरण देखभाल की मात्रा के बीच एक सहसंबंध होता है; इसके अलावा, अमीर देशों के नागरिक गरीब देशों के नागरिकों की तुलना में पर्यावरण के लिए अधिक चिंता व्यक्त करते हैं। निष्कर्षों के अनुसार, पर्यावरण संबंधी चिंता उत्तर-भौतिकवादी विचारों और कई सामाजिक-जनसांख्यिकीय विशेषताओं से दृढ़ता से जुड़ी हुई है। 1993 और 2000 में लिए गए ISSP मापों की तुलना के अनुसार, 1990 के दशक के प्रारंभ से विचाराधीन देशों में पर्यावरण संबंधी चिंताएं लगभग समाप्त हो गई हैं।

ओगुज़ एट अल., (2010)। विश्वविद्यालय के छात्रों की पर्यावरण संबंधी संवेदनशीलता और जागरूकता इस जांच का केंद्र है। इन कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम में पर्यावरण पर जोर दिए जाने के कारण, अंकारा, तुर्की के विश्वविद्यालयों में पर्यावरण इंजीनियरिंग, शहर और क्षेत्रीय नियोजन, और लैंडस्केप डिज़ाइन कार्यक्रमों में प्रथम और चौथे वर्ष के स्नातक छात्रों में से प्रतिभागियों का चयन किया गया था। प्रश्नावली का उपयोग करके दो सौ बारह छात्रों से व्यक्तिगत रूप से मतदान किया गया। पर्यावरण संबंधी चिंताओं पर बहुत सारी कक्षाएँ लेने वाले छात्रों के बावजूद, शोध से पता चलता है कि वे अभी भी विषय के बारे में पर्याप्त नहीं जानते हैं या पर्यावरण के मामले में जिम्मेदारी से काम नहीं करते हैं, और उनके ग्रेड का इन परिणामों पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है। निष्कर्ष: पर्यावरण संबंधी ज्ञान आवश्यक रूप से पर्यावरण संबंधी जागरूकता और व्यवहारिक इरादों में तब्दील नहीं होता है; विश्वविद्यालय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय योजना की आवश्यकता होती है; और मौजूदा पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

वुल्फ एट अल., (2011)। लगभग तीस वर्षों से, शोधकर्ता और नीति निर्माता इस बात में रुचि रखते हैं कि जनता जलवायु परिवर्तन को कैसे देखती है और उससे कैसे जुड़ती है। काम के इस बढ़ते हुए संग्रह का एक हिस्सा इन मान्यताओं में गहराई से उतरता है, जिसमें गहन साक्षात्कार, फ़ोकस समूह, छोटे-नमूने के सर्वेक्षण और केस स्टडी सहित गुणात्मक तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इस क्षेत्र में व्यापक अध्ययन कई महाद्वीपों पर विभिन्न जातीय और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों द्वारा किया गया है, साथ ही जनसांख्यिकीय चर की एक विस्तृत श्रृंखला भी। संदेश और संदेशवाहक, सूचना प्रसंस्करण, दर्शकों के अंतर,

[4] कुमार, सी., और चौधरी, आर. (2021)। बिहार के अस्पतालों में पर्यावरण स्थिरता अभ्यास। पर्यावरण स्थिरता में वर्तमान शोध, 3, 100106।

IJAMSR

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

फ़्रेमिंग का प्रभाव और संचार के अन्य पहलुओं की जांच की गई है। इस अध्ययन में, हम जलवायु परिवर्तन पर साहित्य के इस खंड पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उन तरीकों पर ध्यान आकर्षित करते हैं जिनमें यह विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक संदर्भों में समान और भिन्न है। यह शोध न केवल जनसांख्यिकीय और भौगोलिक असमानताओं में अधिक गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, बल्कि संज्ञानात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में भी है जो सार्वजनिक विश्वासों और विभिन्न संचार रणनीतियों की प्रभावकारिता को रेखांकित करते हैं। ज़्यादातर मामलों में, इस तरह की जानकारियाँ बड़ी आबादी का सर्वेक्षण करके नहीं प्राप्त की जा सकतीं। हमारे विश्लेषण में, हमने पाया कि ये अध्ययन व्यापक रूप से भिन्न थे और कई बार एक-दूसरे का खंडन भी करते थे। यह न केवल सार्वजनिक जागरूकता और भागीदारी में आगे के शोध की आवश्यकता को उजागर करता है, बल्कि यह इस तथ्य को भी उजागर करता है कि कोई भी एक सिद्धांत जलवायु परिवर्तन के प्रति मानवीय प्रतिक्रियाओं और अनुभवों की विस्तृत श्रृंखला को नहीं समझा सकता है। प्रकाशन तिथि: 2011-02-05, पृष्ठ 547-569, DOI: 10.1002/wcc.120.

सवोलैनेन एट अल., (2012)। समावेशी शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय चर्चाओं ने कार्यान्वयन पर विविध राष्ट्रीय नीतियों के प्रभावों को ध्यान में रखना नज़रअंदाज़ किया है, जैसे कि शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों में, इन नीतियों के बीच स्पष्ट असमानताओं के बावजूद। समावेशी प्रथाओं को अपनाने में सेवारत शिक्षकों के दृष्टिकोण और आत्म-प्रभावकारिता के तुलनात्मक अध्ययन से दक्षिण अफ़्रीका और फ़िनलैंड में शिक्षक शिक्षा के लिए निष्कर्ष और निहितार्थ इस लेख में प्रस्तुत किए गए हैं। कुल 822 फ़िनिश प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों और 319 दक्षिण अफ़्रीकी शिक्षकों ने एक सर्वेक्षण भरा जिसमें उनसे समावेशी शिक्षा के बारे में उनकी भावनाओं, विचारों और चिंताओं और शिक्षण में समावेशी प्रथाओं को लागू करने की उनकी अपनी क्षमताओं में उनके आत्मविश्वास के बारे में पूछा गया। जबकि विकलांग लोगों के प्रति दृष्टिकोण आम तौर पर दोनों देशों में अनुकूल थे, शोध से पता चला कि कई शिक्षक कक्षा में विकलांग छात्रों का स्वागत करने के प्रभावों के बारे में चिंतित थे। फ़िनलैंड के शिक्षकों ने व्यवहार प्रबंधन में अपनी खुद की क्षमता को अपना सबसे निचला बिंदु माना, जबकि उनके दक्षिण अफ़्रीकी सहयोगियों ने इसे अपना सबसे मज़बूत पक्ष माना। आत्म-प्रभावकारिता और समावेशिता के प्रति दृष्टिकोण के बीच एक मजबूत सहसंबंध था, खासकर जब सहयोग में प्रभावकारिता की बात आती है। इन परिणामों के सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा दोनों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं, जिनका विवरण नीचे दिया गया है।

फीनबर्ग, एम., और विलर, आर. (2013)। यह हैरान करने वाली बात है कि पर्यावरण के मुद्दों पर अमेरिकियों के विचार इतने अलग-अलग हैं। इस मामले की जांच करने के लिए, हमने पाँच शोध किए। राजनीतिक विचारधारा और पर्यावरण संबंधी भावनाओं के बीच संबंध के लिए एक संभावित व्याख्या उदारवादियों की प्रवृत्ति है, जैसा कि अध्ययन 1 ए और 1 बी में दिखाया गया है, जो रूढ़िवाद के विपरीत, पर्यावरण को नैतिक लेंस के माध्यम से देखने की प्रवृत्ति है। अध्ययन 2 ए और 2 बी, जिसमें सार्वजनिक सेवा घोषणाओं और समाचार पत्रों के ऑप-एड की सामग्री का विश्लेषण किया गया, ने खुलासा किया कि रूढ़िवादियों की तुलना में उदारवादियों को नुकसान और देखभाल से जुड़े नैतिक मुद्दों पर बेहतर समझ थी, जो आधुनिक पर्यावरणीय प्रवचन का आधार बनते हैं। अध्ययन 3 ने प्रदर्शित किया कि उदारवादियों और रूढ़िवादियों की पर्यावरणीय भावनाओं के बीच का अंतर लगभग समाप्त हो गया जब पर्यावरण समर्थक

IJAMSR
International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

प्रवचन को शुद्धता के संदर्भ में फिर से तैयार किया गया, एक नैतिक लक्ष्य जो मुख्य रूप से रूढ़िवादियों के साथ प्रतिध्वनित होता है। इन निष्कर्षों के अनुसार, जब पर्यावरणीय मुद्दों की बात आती है तो उदारवादियों और रूढ़िवादियों के बीच मतभेद में नैतिकता एक प्रमुख कारक है, और अन्य नैतिक अवधारणाओं का उपयोग करके पर्यावरणीय भाषा को पुनः परिभाषित करने से इस विभाजन को पाटने में मदद मिल सकती है।

गिफर्ड एट अल., (2014)। हमारा ध्यान समकालीन अध्ययनों पर है जो पर्यावरण के प्रति जागरूक दृष्टिकोण और कार्यों में योगदान देने वाले मानवीय और सामाजिक कारकों की जांच करते हैं। पर्यावरण के प्रति चिंता और आचरण को समझने की जटिलता इन कारकों की संख्या से पता चलती है, जो पहले की तुलना में काफी अधिक है। अठारह अलग-अलग व्यक्तिगत और सामाजिक तत्व हैं जो प्रभाव डालते हैं। व्यक्तिगत घटकों में व्यक्ति का पालन-पोषण, शिक्षा का स्तर, व्यक्तित्व, मूल्य, राजनीतिक और विश्वदृष्टि विश्वास, आकांक्षाएं, एजेंसी की भावना, संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह, व्यक्ति के भौतिक पर्यावरण से संबंध, लिंग, आयु और वह गतिविधियाँ शामिल हैं जिनमें व्यक्ति शामिल होना चाहता है। धर्म, शहरी-ग्रामीण विभाजन, सामाजिक मानक, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक और जातीय विविधता और पर्यावरण के लिए खतरनाक स्थानों से निकटता सभी सामाजिक प्रभावों के उदाहरण हैं। हम यह भी स्वीकार करते हैं कि लोगों की गैर-पर्यावरणीय प्रेरणाएँ, जैसे कि पैसे बचाने या अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने की इच्छा, अक्सर पर्यावरण के प्रति अनुकूल कार्यों के पीछे प्रेरक शक्ति होती हैं, न कि उपर्युक्त कारकों में से कोई भी। निष्कर्ष में, यह निश्चित है कि 18 श्रेणियों के संयोजन से पर्यावरणीय परिणाम उत्पन्न होते हैं जो इन प्रभावों का परिणाम हैं। वैज्ञानिकों को पर्यावरण के प्रति जागरूक कार्यों का पता लगाने के लिए इन कई कारकों के परस्पर क्रिया और मध्यम प्रभावों के बारे में अतिरिक्त जानकारी एकत्र करने को प्राथमिकता देनी चाहिए।

पिसानो एट अल., (2017)। इस लेख में देशों के बीच पर्यावरण व्यवहार में अंतर को समझाने का प्रयास किया गया है। पूर्वानुमान यह था कि सामाजिक-जनसांख्यिकीय और मनोवैज्ञानिक चरों को ध्यान में रखने के बाद, पर्यावरण व्यवहार राष्ट्रीय समृद्धि, भौतिकवाद के बाद, शैक्षिक विकास और पर्यावरण चुनौतियों के साथ सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध है। संरचनागत प्रभावों को व्यक्तिगत-स्तर के चर द्वारा कैप्चर किया जाता है, जो राष्ट्रीय स्तर पर भिन्नता के एक बड़े हिस्से के लिए जिम्मेदार हैं। ये प्रासंगिक कारक बाकी भिन्नता के लिए जिम्मेदार हैं। शिक्षा विकास के अपवाद के साथ, जो निजी पर्यावरण व्यवहार को प्रभावित नहीं करता है, और पर्यावरण गिरावट, जो व्यवहार से प्रतिकूल रूप से सहसंबद्ध है, सभी देश-स्तरीय कारक पूर्वानुमानित दिशा में भविष्यवाणी करते हैं। क्रॉस-लेवल इंटरैक्शन के अनुसार, अधिक विकसित देशों में प्रोइकोलॉजिकल विचारों और रिपोर्ट किए गए प्रोएनवायरमेंटल आचरण के बीच बड़े सहसंबंध हैं। यह बहुत आवश्यक है। ये परिणाम एक ही समय में विभिन्न देशों में व्यवहार पर व्यक्तिगत और प्रासंगिक कारकों के प्रभाव का मूल्यांकन करने की आवश्यकता को उजागर करके पर्यावरण व्यवहार पर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के विस्तार में योगदान करते हैं।

यानेज़ एट अल., (2017)। नियमित आधार पर बाहरी गतिविधियों में भाग लेने से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक वृद्धि को बढ़ावा मिल सकता है, साथ ही प्राकृतिक दुनिया के लिए समझ और प्रशंसा भी बढ़ सकती है। बायोफिलिया और प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण पर इस खोजपूर्ण शोध में ग्रामीण क्षेत्रों

IJAMSR
International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

और शहरी क्षेत्रों के छोटे बच्चों की तुलना की गई। पानी, पौधे और जानवर शहरी और ग्रामीण परिवेश में खुद को अलग-अलग तरीकों से पेश कर सकते हैं। यह पता लगाने के लिए कि क्या ये परिस्थितियाँ शुरुआती बच्चों में बायोफिलिया और दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं, उन्हें विभिन्न संदर्भों में तुलना करना मददगार हो सकता है। छत्तीस बच्चों (शहर में n = 27 और देश में 9) ने प्राकृतिक सेटिंग्स में अपनी भावनाओं और अनुभवों के बारे में संरचित साक्षात्कार भरे। क्षेत्र के अनुसार बच्चों में बायोफिलिया में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं देखी गई। बच्चों के दृष्टिकोण में निम्नलिखित विषय सामने आए: 1) इसके घटकों को नाम देकर प्रकृति को परिभाषित करने का महत्व; 2) यह तथ्य कि बच्चे समझते हैं कि उनके कार्य प्राकृतिक पर्यावरण की स्थिति को प्रभावित करते हैं; और 3) प्राकृतिक दुनिया में आचरण को नियंत्रित करने वाले नियमों की सार्वभौमिकता। यह संभव है कि भूगोल प्रीस्कूलर में बायोफिलिया और रवैये का सबसे अच्छा पूर्वानुमान नहीं है, बल्कि यह उनके संज्ञानात्मक विकास और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं का सबसे अच्छा पूर्वानुमान है। शिक्षकों और अभिभावकों को लेखकों के सुझावों से लाभ हो सकता है।

कुमार बसाक एट अल., (2018)। कार्यस्थल और कक्षाओं में डिजिटल गैजेट्स का प्रसार, चाहे वह आधिकारिक हो या अनौपचारिक, 2000 के दशक में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) में उछाल का प्रत्यक्ष परिणाम है। इस अध्ययन में ई-लर्निंग, एम-लर्निंग और डी-लर्निंग की अवधारणाओं, शब्दावली, अंतर, मौलिक दृष्टिकोण, लाभ, नुकसान, समानता और अंतर को परिभाषित किया गया है, जो फिर मौजूदा साहित्य की जांच करता है। यह दर्शाता है कि डी-लर्निंग ई-लर्निंग और एम-लर्निंग दोनों की मूल श्रेणी है। दूसरा पहलू यह है कि कुछ सीखने की तकनीकों को ई-लर्निंग और एम-लर्निंग दोनों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

नोविन्स्की एट अल., (2019)। यह शोध इस संभावना पर विचार करता है कि विसेग्राड देशों - चेक गणराज्य, हंगरी, पोलैंड और स्लोवाकिया - में विश्वविद्यालय के छात्रों में उद्यमशीलता की महत्वाकांक्षा (ईआई) होने की अधिक संभावना है यदि उन्हें उद्यमशीलता की शिक्षा (ईई) मिलती है। शिक्षा और उद्यमशीलता आत्म-प्रभावकारिता (ईएसई) का चारों देशों में से प्रत्येक में उद्यमशीलता के झुकाव पर अलग-अलग प्रभाव पड़ा। हाई स्कूलों में उद्यमिता कार्यक्रम लागू करने वाले चार देशों में से केवल पोलैंड ने ही छात्रों के परिणामों पर सकारात्मक और सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव दिखाया है। इसके अलावा, यह पाया गया कि ईई अप्रत्यक्ष रूप से ईआई को प्रभावित करता है। अध्ययन, जो ईएसई के लिए एक बहु-निर्माण दृष्टिकोण को नियोजित करता है, दर्शाता है कि खोज, योजना और मार्शलिंग गतिविधियों से जुड़े ईएसई इरादों पर उद्यमशीलता शिक्षा के प्रभाव को मध्यस्थ करते हैं। हालाँकि, इस मध्यस्थता के प्रभाव संबंधित देशों में अलग-अलग हैं। अंत में, जब लिंग भेद को देखते हैं, तो यह स्पष्ट है कि महिलाओं को उद्यमिता शिक्षा से पुरुषों की तुलना में अधिक लाभ होता है, इस तथ्य के बावजूद कि उनमें अक्सर ईएसई और उद्यमशीलता की महत्वाकांक्षाओं का स्तर कम होता है।

हुआंग एट अल., (2020)। दिसंबर में महामारी के रूप में फैलने के बाद से 76,000 से अधिक लोग कोरोनावायरस बीमारी (COVID-19) से संक्रमित हो चुके हैं, जिसने चिकित्सा क्षेत्र में काम करने वाले 3,000 से अधिक लोगों को संक्रमित किया है। यह स्थिति नर्सों के लिए बहुत खतरनाक है क्योंकि यह अत्यधिक

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

संक्रामक है, चरम स्थितियों में घातक हो सकती है, और इसका इलाज करने के लिए कोई विशेष दवा मौजूद नहीं है। नतीजतन, नर्सों की भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ और मुकाबला करने के तंत्र बहुत प्रभावित होते हैं। इसलिए, नर्सों और नर्सिंग छात्रों की तुलना करके, यह शोध नर्सों की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और मुकाबला करने के तंत्र को समझने की कोशिश करेगा। 1 फरवरी, 2020 से 20 फरवरी, 2020 तक, अनहुई प्रांत में, इस शोध ने लोगों को आमंत्रित करने के लिए ऑनलाइन सर्वेक्षण 'प्रश्नावली स्टार' और स्नोबॉल सैंपलिंग दृष्टिकोण का उपयोग किया। पुरुषों की तुलना में, महिलाओं ने चिंता और आतंक के बहुत अधिक स्तर प्रदर्शित किए। हालाँकि ग्रामीण क्षेत्रों में व्यक्तियों ने उदासी के उच्च स्तर की सूचना दी, लेकिन शहरवासियों में ये लक्षण प्रदर्शित होने की अधिक संभावना थी। प्रतिभागियों के COVID-19 क्षेत्र के पास पहुँचने पर चिंता और क्रोध बढ़ जाता है। कोविड-19 महामारी के कारण अस्पताल बहुत ज़्यादा तनाव में हैं और फ्रंटलाइन नर्सें इस तनाव का सबसे ज़्यादा सामना कर रही हैं। नर्सों के लिए मनोवैज्ञानिक सहायता और मुकाबला कौशल प्रशिक्षण अस्पतालों के लिए प्राथमिकता होनी चाहिए।

ओगबू एट अल., (2022)। इस पेपर के लिए मेरे तीन लक्ष्य हैं। पाठ ओगबू द्वारा अल्पसंख्यक समूहों के वर्गीकरण को रेखांकित करके शुरू होता है, जिसे उन्होंने दो समूहों में विभाजित किया: वे जिनके सदस्य स्वेच्छा से आप्रवासी थे और वे जिनके सदस्य नहीं थे। इसके अतिरिक्त, यह अल्पसंख्यक शैक्षणिक उपलब्धि पर ओगबू की सांस्कृतिक-पारिस्थितिक थीसिस को स्पष्ट करता है। अंत में, यह सिद्धांत के कुछ शैक्षणिक निहितार्थ प्रस्तुत करता है। स्कूल के अनुभव में अल्पसंख्यक समूहों के बीच अंतर का विश्लेषण करने और समझने के लिए एक अनुमानी उपकरण के रूप में, लेखक अल्पसंख्यक समूहों की टाइपोलॉजी को देखते हैं।

3. शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के बीच भिन्नताएँ

शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के बीच भिन्नताएँ न केवल भौगोलिक स्थिति के कारण हैं, बल्कि ये शिक्षा के स्तर, संसाधनों की उपलब्धता, और शिक्षण विधियों में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। इन भिन्नताओं का छात्रों के विकास, उनके दृष्टिकोण, और समग्र शिक्षा प्रणाली पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा के स्तर में अंत: रशहरी और ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षा के स्तर में एक महत्वपूर्ण अंतर होता है। शहरी विद्यालयों में आमतौर पर उच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध होती है। यहाँ प्रशिक्षित शिक्षक, आधुनिक शिक्षण उपकरण, और तकनीकी संसाधन अधिक होते हैं। इसके परिणामस्वरूप, शहरी छात्रों को सैद्धांतिक और प्रायोगिक ज्ञान दोनों ही प्राप्त होते हैं। वहीं, ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षा का स्तर अक्सर निम्न होता है। यहाँ प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, अव्यवस्थित पाठ्यक्रम, और शिक्षण सामग्रियों की कमी जैसी समस्याएँ आम हैं। कई बार, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों का अभाव होता है, जो छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में बाधा डालता है। इस कारण से, ग्रामीण छात्रों को शहरी छात्रों की तुलना में कम जानकारी और ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे उनके विकास और अवसरों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

संसाधनों की उपलब्धता और उसके प्रभाव: संसाधनों की उपलब्धता भी शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के बीच एक महत्वपूर्ण भिन्नता को दर्शाती है। शहरी विद्यालयों में आधुनिक तकनीकी संसाधन जैसे कंप्यूटर, लैपटॉप, और इंटरनेट की सुविधा होती है, जो छात्रों को विभिन्न विषयों में गहन अध्ययन करने का अवसर

प्रदान करती है। इसके अलावा, शहरी विद्यालयों में प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, और खेल के मैदान जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध होती हैं, जो छात्रों के समग्र विकास में सहायक होती हैं।इसके विपरीत, ग्रामीण विद्यालयों में संसाधनों की भारी कमी होती है। अक्सर, यहाँ आवश्यक शिक्षण सामग्री, पुस्तकें, और प्रौद्योगिकी का अभाव होता है। इसके परिणामस्वरूप, ग्रामीण छात्रों को शहरी छात्रों की तुलना में सीमित ज्ञान और अनुभव प्राप्त होता है। संसाधनों की कमी न केवल छात्रों के अध्ययन में बाधा डालती है, बल्कि यह उनके मानसिक विकास, रचनात्मकता और कौशल विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव डालती है।[5]

4. क्षेत्र की भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति

मुजफ्फरपुर, बिहार, एक महत्वपूर्ण शहर है जो अपने भौगोलिक, सामाजिक, और आर्थिक संदर्भ में विशिष्टता रखता है। इस क्षेत्र की विशेषताएँ यहाँ के निवासियों के जीवन, उनकी शिक्षा, और पर्यावरणीय दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं।

भौगोलिक स्थिति: मुजफ्फरपुर उत्तर बिहार के मध्य भाग में स्थित है और यह गंगा नदी के समीप स्थित है। यह क्षेत्र बागमती और कुसहा नदियों द्वारा घिरा हुआ है, जो इसे उपजाऊ बनाती हैं। यहाँ की मिट्टी बहुत उपजाऊ है, जो कृषि गतिविधियों के लिए अनुकूल है। हालांकि, इस क्षेत्र में हर वर्ष बाढ़ की समस्या बनी रहती है, जिससे किसानों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बाढ़ के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होता है, और यह स्थानीय निवासियों की आजीविका पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

सामाजिक स्थिति: मुजफ्फरपुर की सामाजिक संरचना विविधतापूर्ण है। यहाँ विभिन्न जातियों और समुदायों के लोग निवास करते हैं, जो एक दूसरे के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान करते हैं। शिक्षा की उपलब्धता में असमानता है, जिसके कारण शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच सामाजिक भिन्नताएँ स्पष्ट होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच कम है, जो सामाजिक विकास में बाधा डालती है। इसके अलावा, जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानताएँ भी इस क्षेत्र की सामाजिक स्थिति को प्रभावित करती हैं।

आर्थिक स्थिति: मुजफ्फरपुर की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर करती है। यहाँ की प्रमुख फसलें चावल, गेहूँ, और गन्ना हैं। हालाँकि, यहाँ के किसानों को प्राकृतिक आपदाओं, जैसे बाढ़ और सूखे, के कारण आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, मुजफ्फरपुर में छोटे उद्योग और व्यापार भी हैं, लेकिन ये सीमित मात्रा में हैं। शहरी क्षेत्रों में कुछ रोजगार के अवसर हैं, जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, और छोटे-मोटे व्यवसाय, लेकिन यह ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में बहुत अधिक नहीं है। बेरोजगारी और आर्थिक असमानता इस क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियों में से एक है। [6]

[5] अग्रवाल, टी. (2014). ग्रामीण और शहरी भारत में शैक्षिक असमानता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 34, 11-19.

[6] झा, जे.एन., सिंह, एस.के., कुमारी, एस., प्रियदर्शी, ए., कुमार, वी., और कुमार, ए. (2021)। बिहार। भारत की मिट्टी और चट्टानों की भू-तकनीकी विशेषताओं में (पृष्ठ 79-101)। सीआरसी प्रेस।

5. शहरी और ग्रामीण जीवनशैली का अंतर

मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत के एक प्रमुख जिले के रूप में अपनी विशिष्टताओं के कारण शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जीवनशैली के बीच कई बुनियादी अंतर पाता है। शहरी और ग्रामीण जीवनशैली के ये अंतर शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक गतिविधियाँ, पर्यावरण, और सामाजिक जीवन जैसे विभिन्न पहलुओं में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। इन भिन्नताओं का न केवल लोगों के दैनिक जीवन पर असर पड़ता है, बल्कि उनके समग्र विकास और सोच पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

शहरी क्षेत्रों में, आवास का ढांचा घनी आबादी वाले क्षेत्रों से प्रभावित होता है। लोग आमतौर पर अपार्टमेंट या फ्लैट में रहते हैं, जिनकी सुविधाएँ अत्यधिक विकसित होती हैं। शहरी क्षेत्रों में इन्फ्रास्ट्रक्चर भी उच्चस्तरीय होता है, जिसमें सड़कों की बेहतर स्थिति, सार्वजनिक परिवहन, और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता शामिल है। इसके विपरीत, ग्रामीण इलाकों में घर आमतौर पर खुले क्षेत्रों में फैले होते हैं, जिनमें खेती के लिए अधिक भूमि होती है। ग्रामीण इलाकों का प्राकृतिक परिवेश अधिक हरा-भरा और शांतिपूर्ण होता है, लेकिन यहाँ की बुनियादी सुविधाओं में कमी होती है। यहाँ पक्की सड़कों और बिजली की अनियमित आपूर्ति जैसी समस्याएँ आम हैं। यह भौगोलिक स्थिति और बुनियादी ढांचे का अंतर शहरी और ग्रामीण जीवनशैली को परिभाषित करने वाले प्रमुख तत्वों में से एक है।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में भी शहरी और ग्रामीण जीवनशैली में बड़ा अंतर देखा जाता है। शहरी क्षेत्रों में निजी और सरकारी स्कूल, कॉलेज, और विश्वविद्यालयों की उपलब्धता अधिक होती है। यहाँ छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए बेहतर संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक, और तकनीकी सहायता प्राप्त होती है। उदाहरण के तौर पर, शहरी स्कूलों में कंप्यूटर, इंटरनेट, और स्मार्ट क्लास जैसी सुविधाएँ सामान्य हैं, जिससे छात्रों को विविध विषयों की गहरी समझ मिलती है। स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में, शहरी क्षेत्रों में सरकारी और निजी अस्पतालों की संख्या अधिक होती है और लोग आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं तक आसानी से पहुँच सकते हैं।

इसके विपरीत, ग्रामीण इलाकों में शिक्षा की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर होती है। यहाँ के विद्यालयों में संसाधनों की कमी होती है और प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या कम होती है। इससे छात्रों की शिक्षा की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। तकनीकी संसाधनों का अभाव और शिक्षण सामग्री की सीमित उपलब्धता के कारण ग्रामीण छात्रों को शहरी छात्रों की तुलना में कम जानकारी और अवसर मिलते हैं। इसी तरह, स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति भी ग्रामीण क्षेत्रों में कमजोर है। यहाँ अस्पतालों की कमी और स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता के कारण ग्रामीण लोगों को गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इलाज के लिए उन्हें अक्सर शहरी क्षेत्रों की ओर रुख करना पड़ता है। यह स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में शहरी और ग्रामीण जीवनशैली के बीच स्पष्ट अंतर को दर्शाता है।

आर्थिक गतिविधियों की दृष्टि से भी शहरी और ग्रामीण जीवनशैली में स्पष्ट अंतर पाया जाता है। शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों का स्वरूप अधिक विविध होता है। यहाँ विभिन्न औद्योगिक, व्यापारिक, और सेवा क्षेत्र की गतिविधियाँ प्रमुख होती हैं, जिनसे रोजगार के अधिक अवसर उत्पन्न होते हैं। लोग शिक्षा, आईटी,

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

स्वास्थ्य, व्यापार, और अन्य सेवाओं में रोजगार प्राप्त करते हैं, जिससे उनकी आय और जीवन स्तर उच्च होता है। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में प्रमुख आर्थिक गतिविधि कृषि होती है। यहाँ के लोग खेती पर निर्भर होते हैं और उनके लिए रोजगार के अन्य अवसर सीमित होते हैं। ग्रामीण इलाकों में छोटे पैमाने के उद्योग, हस्तशिल्प, और खेती आधारित उद्योग होते हैं, लेकिन ये शहरी क्षेत्रों की तुलना में बहुत कम होते हैं। इस प्रकार, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों का स्वरूप और उनके द्वारा प्रदान किए गए अवसर एक-दूसरे से बहुत अलग होते हैं।

शहरी और ग्रामीण जीवनशैली के बीच संस्कृति और सामाजिक जीवन में भी अंतर देखा जा सकता है। शहरी क्षेत्रों में सांस्कृतिक गतिविधियाँ और सामाजिक जीवन अधिक गतिशील और विविध होता है। यहाँ विभिन्न समुदायों के लोग एक साथ रहते हैं और अपने-अपने त्योहार, परंपराएँ, और रीति-रिवाज मनाते हैं। इसके अलावा, शहरी लोगों के पास जीवनशैली और कार्य की व्यस्तता के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती होती है, लेकिन वे सामाजिक गतिविधियों में भी सक्रिय रहते हैं। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक जीवन अधिक पारंपरिक और सामूहिक होता है। यहाँ लोग एक दूसरे के साथ अधिक निकटता से जुड़े होते हैं और त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठानों, और पारिवारिक आयोजनों में बड़े पैमाने पर भाग लेते हैं। ग्रामीण जीवन अधिक सामूहिक होता है, जहाँ लोग एक-दूसरे के साथ मिलकर सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेते हैं और समुदाय की भलाई के लिए काम करते हैं।[7]

पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी शहरी और ग्रामीण जीवनशैली में भिन्नताएँ हैं। शहरी क्षेत्रों में औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण पर्यावरण प्रदूषण की समस्याएँ अधिक होती हैं। वायु, जल, और ध्वनि प्रदूषण जैसी समस्याएँ शहरी इलाकों में प्रमुख रूप से देखी जाती हैं। हालांकि, शहरी क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता भी अधिक होती है और यहाँ विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संगठन इस दिशा में कार्य करते हैं। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण प्रदूषण की समस्याएँ कम होती हैं, लेकिन लोग पर्यावरण के प्रति उतने जागरूक नहीं होते। ग्रामीण इलाकों में कृषि आधारित जीवनशैली के कारण लोग प्रकृति के करीब होते हैं, लेकिन संसाधनों की कमी के कारण पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के प्रयास सीमित होते हैं।

मुजफ्फरपुर के शहरी और ग्रामीण जीवनशैली के बीच यह अंतर स्पष्ट रूप से जीवन के हर पहलू पर दिखाई देता है। शहरी क्षेत्रों में लोगों के पास बेहतर सुविधाएँ, रोजगार के अवसर, और संसाधन होते हैं, जो उनके जीवन स्तर को उच्च बनाते हैं। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक परिवेश और सामूहिक जीवनशैली के बावजूद संसाधनों की कमी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता, और आर्थिक अवसरों की कमी जैसे मुद्दे जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। अंततः, यह स्पष्ट है कि शहरी और ग्रामीण जीवनशैली के बीच का अंतर न केवल इन क्षेत्रों के निवासियों के जीवन पर प्रभाव डालता है, बल्कि उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक विकास को भी आकार देता है। यह भिन्नताएँ इस बात को दर्शाती हैं कि दोनों जीवनशैली की अपनी-अपनी चुनौतियाँ और अवसर हैं, जिनसे निपटने के लिए सरकार और समाज को एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना होगा ताकि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच की असमानता को कम किया जा

[7] वैन डुइजने, आर. जे. (2019)। भारत का शहरीकरण क्यों छिपा हुआ है: “ग्रामीण” बिहार से अवलोकन। विश्व विकास, 123, 104610।

IJAMSR
International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

सके और दोनों क्षेत्रों के निवासियों को समान अवसर और सुविधाएँ प्राप्त हों। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक जीवन अधिक पारंपरिक और सामूहिक होता है। यहाँ परंपराएँ और सांस्कृतिक गतिविधियाँ महत्वपूर्ण होती हैं। लोग एक-दूसरे के साथ मिलकर त्योहार मनाते हैं और पारिवारिक रिश्तों को प्राथमिकता देते हैं। [8]

6. अध्ययन का उद्देश्य

शहरी और ग्रामीण जीवनशैली के बीच मुजफ्फरपुर, बिहार के छात्रों के दृष्टिकोण में स्पष्ट भिन्नताएँ पाई जाती हैं। शहरी क्षेत्रों में छात्रों को उच्च शिक्षा, तकनीकी संसाधन, और बेहतर अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे उनका पर्यावरणीय दृष्टिकोण और जागरूकता व्यापक होती है। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के साधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, और सीमित तकनीकी संसाधनों के कारण छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता अपेक्षाकृत कम होती है। ग्रामीण जीवनशैली अधिक पारंपरिक और कृषि आधारित होती है, जहाँ छात्रों का सीधा संबंध पर्यावरण से होता है, परंतु उनकी जागरूकता और संसाधनों की कमी से पर्यावरणीय मुद्दों पर उनकी समझ सीमित होती है। शहरी छात्रों के पास आधुनिक सुविधाओं और संसाधनों की उपलब्धता होती है, जिससे वे अधिक तकनीकी और व्यापक दृष्टिकोण रखते हैं। ये भिन्नताएँ पर्यावरणीय शिक्षा और जागरूकता के कार्यक्रमों को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच शिक्षा और संसाधनों की उपलब्धता में असमानता को दूर कर पर्यावरणीय समस्याओं पर जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

7. संभावित निष्कर्षों का उल्लेख

इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हो सकता है कि शहरी और ग्रामीण छात्रों के पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ हैं, जो उनके सामाजिक और भौगोलिक संदर्भों से प्रभावित होती हैं। यह निष्कर्ष दर्शा सकते हैं कि शहरी छात्रों में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति अधिक जागरूकता और उनकी सोच में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए विभिन्न शैक्षिक पहलुओं की आवश्यकता है, जैसे कि पर्यावरण शिक्षा के कार्यक्रमों में सुधार, प्रोजेक्ट-आधारित लर्निंग, और सामुदायिक सहभागिता। वहीं, ग्रामीण छात्रों की जागरूकता बढ़ाने के लिए स्थानीय संसाधनों और सांस्कृतिक परंपराओं का उपयोग करते हुए विशेष रणनीतियाँ विकसित की जा सकती हैं, जिससे उन्हें पर्यावरण संरक्षण के महत्व का एहसास हो सके। इसके अतिरिक्त, जब छात्रों की सोच और दृष्टिकोण में परिवर्तन होगा, तो यह उनके व्यवहार में भी बदलाव ला सकता है, जैसे कि प्लास्टिक के उपयोग को कम करना, जल का संरक्षण, और प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग। इस प्रकार, अगर छात्रों में पर्यावरणीय जिम्मेदारी की भावना विकसित की जाए, तो यह न केवल उनके व्यक्तिगत विकास में सहायक होगा, बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव लाने की संभावना को बढ़ाएगा। छात्रों द्वारा किए गए ये छोटे-छोटे परिवर्तन एक बड़े सामाजिक आंदोलन का हिस्सा बन सकते हैं, जो पर्यावरण की सुरक्षा और स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के निष्कर्षों का प्रयोग शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने, जागरूकता बढ़ाने, और पर्यावरण संरक्षण के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए किया जा सकता है, जिससे अंततः समाज में एक स्थायी और समृद्ध भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाया

[8] कुमारी, एस., सिंह, वी., और वर्मा, आर. (2017). भागलपुर शहरी लोगों में रक्तचाप के विकास पर जीवनशैली पैटर्न की भूमिका।

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

जा सके। इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि मुजफ्फरपुर, बिहार के शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ हैं। शहरी छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता और संबंधित मुद्दों जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और संसाधनों के संरक्षण के प्रति अधिक समझ और संज्ञान देखा गया, जो उनके लिए उपलब्ध बेहतर शिक्षा और संसाधनों का परिणाम हो सकता है। इसके विपरीत, ग्रामीण छात्रों में इन मुद्दों के प्रति जागरूकता की कमी पाई गई, जिसका कारण संसाधनों की कमी और शिक्षा प्रणाली में असमानता हो सकती है। यह अध्ययन इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि शहरी छात्रों में पर्यावरणीय जिम्मेदारी और व्यवहार में सुधार की प्रवृत्ति अधिक है, जबकि ग्रामीण छात्रों को इन मुद्दों पर अधिक जागरूक और प्रेरित करने की आवश्यकता है। इन परिणामों के आधार पर, पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रमों को अधिक समग्र और समावेशी बनाने की आवश्यकता है, ताकि शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के छात्रों को समान रूप से पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूक किया जा सके। जागरूकता के साथ-साथ व्यवहार में भी परिवर्तन लाने के लिए शिक्षण विधियों में सुधार और संसाधनों की समान उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है। इससे युवाओं में पर्यावरणीय जिम्मेदारी को बढ़ावा मिलेगा और भविष्य में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन के लिए रास्ता खुलेगा।

8. निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मुजफ्फरपुर, बिहार के शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर हैं। शहरी छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता और संरक्षण की प्रवृत्ति अधिक पाई गई, जबकि ग्रामीण छात्रों में जागरूकता की कमी और व्यवहारिक बदलाव की आवश्यकता देखी गई। इन निष्कर्षों के आधार पर, पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रमों में सुधार की आवश्यकता है ताकि दोनों क्षेत्रों के छात्रों को समान रूप से जागरूक किया जा सके। इससे न केवल पर्यावरणीय जिम्मेदारी बढ़ेगी, बल्कि स्थायी विकास की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण योगदान होगा।

संदर्भ

1. फ्रैंज़ेन, ए., और मेयर, आर. (2010)। क्रॉस-नेशनल परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण: ISSP 1993 और 2000 का एक बहुस्तरीय विश्लेषण। यूरोपीय समाजशास्त्रीय समीक्षा, 26(2), 219-234।
2. ओगुज़, डी., काकी, आई., और कावस, एस. (2010)। अंकारा, तुर्की में विश्वविद्यालय के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता। अफ्रीकी कृषि अनुसंधान जर्नल, 5(19), 2629-2636।
3. वुल्फ, जे., और मोजर, एस. सी. (2011)। जलवायु परिवर्तन के साथ व्यक्तिगत समझ, धारणाएं और जुड़ाव: दुनिया भर में गहन अध्ययनों से अंतर्दृष्टि। विले अंतःविषय समीक्षा: जलवायु परिवर्तन, 2(4), 547-569।
4. सवोलैनेन, एच., एंगेलब्रेक्ट, पी., नेल, एम., और मालिनेन, ओ.पी. (2012)। समावेशी शिक्षा में शिक्षकों के दृष्टिकोण और आत्म-प्रभावकारिता को समझना: सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन शिक्षक शिक्षा के लिए निहितार्थ। विशेष आवश्यकता शिक्षा का यूरोपीय जर्नल, 27(1), 51-68।
5. फीनबर्ग, एम., और विलर, आर. (2013)। पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण की नैतिक जड़ें। मनोवैज्ञानिक विज्ञान, 24(1), 56-62।

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

6. गिफ़ोर्ड, आर. (2014)। पर्यावरण मनोविज्ञान मायने रखता है। मनोविज्ञान की वार्षिक समीक्षा, 65, 541-579।
7. पिसानो, आई., और ल्यूबेल, एम. (2017)। क्रॉस-नेशनल परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण व्यवहार: 30 देशों का बहुस्तरीय विश्लेषण। पर्यावरण और व्यवहार, 49(1), 31-58।
8. यानेज़, आर. ई., फीस, बी. एस., और टोरक्वाटी, जे. सी. (2017)। प्रीस्कूल बच्चों की बायोफिलिया और प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण: व्यक्तिगत अनुभवों का प्रभाव।
9. कुमार बसाक, एस., वोटो, एम., और बेलांगर, पी. (2018)। ई-लर्निंग, एम-लर्निंग और डी-लर्निंग: वैचारिक परिभाषा और तुलनात्मक विश्लेषण। ई-लर्निंग और डिजिटल मीडिया, 15(4), 191-216।
10. नोविन्स्की, डब्ल्यू., हैडौड, एम. वाई., लैंकारिक, डी., एगेरोवा, डी., और सेग्लेडी, सी. (2019)। विसेग्राद देशों में विश्वविद्यालय के छात्रों के उद्यमशीलता के इरादों पर उद्यमिता शिक्षा, उद्यमशीलता आत्म-प्रभावकारिता और लिंग का प्रभाव। उच्च शिक्षा में अध्ययन, 44(2), 361-379।
11. हुआंग, एल., लेई, डब्ल्यू., जू, एफ., लियू, एच., और यू, एल. (2020)। नर्सों और नर्सिंग छात्रों में भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ और मुकाबला करने की रणनीतियाँ
12. ओगबू, जे. यू., और सिमंस, एच. डी. (2022)। स्वैच्छिक और अनैच्छिक अल्पसंख्यक: शिक्षा के लिए कुछ निहितार्थों के साथ स्कूल के प्रदर्शन का एक सांस्कृतिक-पारिस्थितिक सिद्धांत। द न्यू इमिग्रेंट्स एंड अमेरिकन स्कूल्स (पृष्ठ 1-34) में। रूटलेज।